बिलकुल तंग और

बहुत ही सिकुड़ा हुआ

बिलकुल तंग और

बहुत ही सिकुड़ा हुआ

एक नाटी वृद्ध महिला रहती थी अकेली घर पर
घर में थी कुर्सियाँ, मेज़ और एक जग शेल्फ पर.

एक वृद्ध ज्ञानी ने सुना उसे करते शिकायत,
“मेरे घर में जगह नहीं है बिलकुल भी पर्याप्त.
वृद्ध ज्ञानी जी, क्या नहीं करेंगे मेरी आप सहायता?
मेरा तो घर है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

"अपनी मुर्गी को घर में ले आओ," वृद्ध ज्ञानी ने कहा

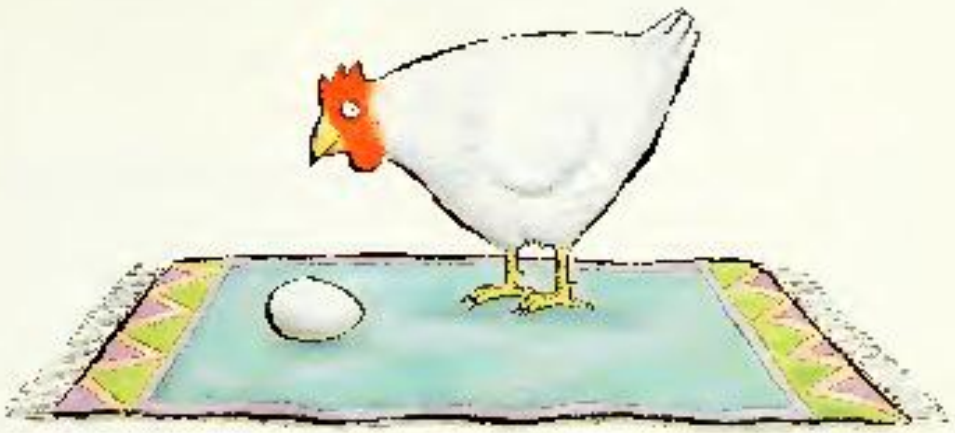

अरे, मुर्गी ने अंडा दे दिया अँगीठी के पास बिछे गलीचे पर,

"मुर्गी को अंदर ले आऊँ? कैसी विचित्र है यह सलाह."

कमरे में पंख फड़फड़ाती लगी वह घूमने और गिरा दिया जग धरती पर.

नाटी वृद्ध महिला चिल्लाई, “मैं क्या करूँ?
एक के लिए था घर छोटा अब दो के लिए है और भी छोटा.
मेरी नाक में हो रही सुरसुरी-लेकिन छींकने के लिए भी है नहीं जगह.
मेरा घर तो है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

और उसने कहा, “वृद्ध ज्ञानी जी, क्या नहीं करेंगे आप मेरी सहायता?
मेरा तो घर है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

“अपनी बकरी को घर में ले आओ,” वृद्ध ज्ञानी ने कहा

“बकरी को अंदर ले आऊँ? कैसी विचित्र है यह सलाह.”

आह, बकरी चबा गई परदे और पैर रख दिया अंडे पर,

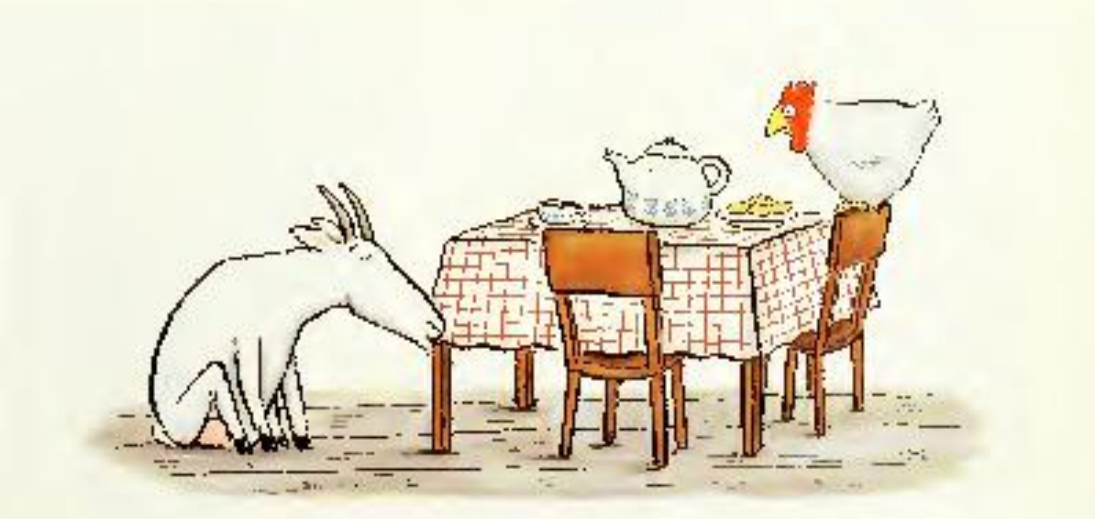

और कुतरने लगी टाँग मेज़ की वह नीचे बैठ कर.

नाटी वृद्ध महिला चिल्लाई, “हे भगवान!
दो के लिए था घर बहुत ही छोटा अब तीन के लिए है नन्हा सा.
मुर्गी चोंच मारती बकरी को और बकरी का चमड़ा है पिस्सुओं से भरा.
मेरा घर तो है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

और उसने कहा, “वृद्ध ज्ञानी जी, क्या नहीं करेंगे आप मेरी सहायता?
मेरा घर तो है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

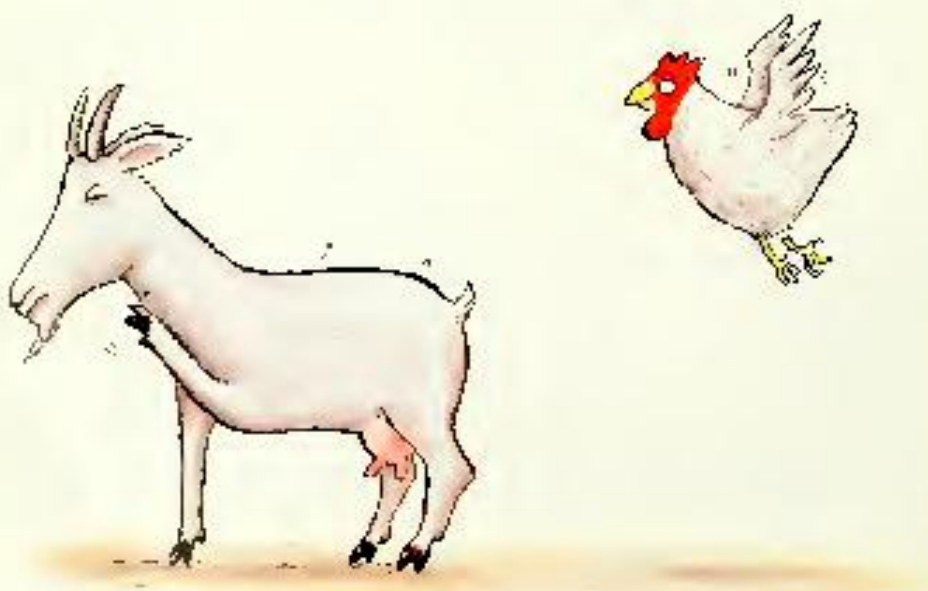

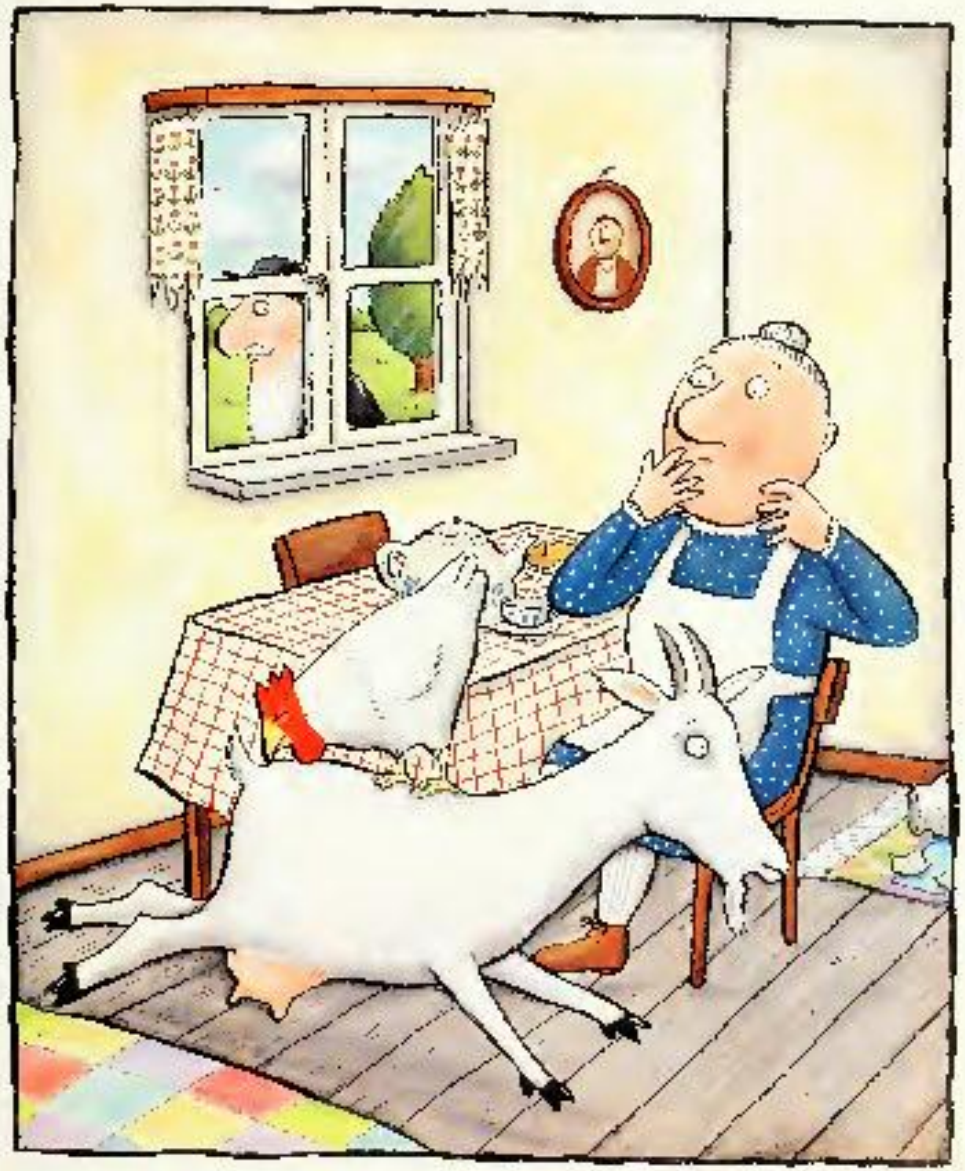

“अपने शूकर को घर में ले आओ,” वृद्ध ज्ञानी ने कहा

लेकिन वह शूकर को अंदर ले आई, वह लगा मुर्गी का पीछा करने.

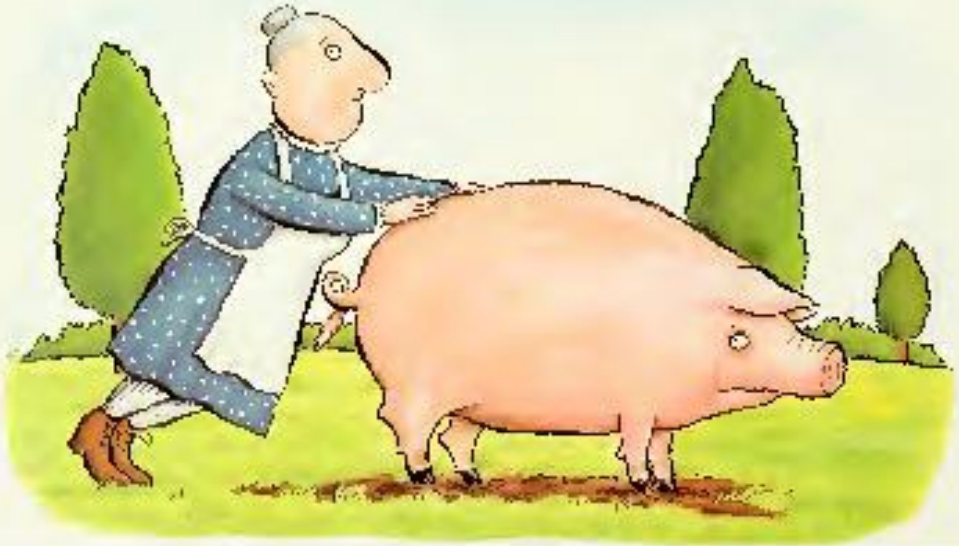

“शूकर को अंदर ले आऊँ? कैसी विचित्र है यह सलाह.”

और अलमारी से खाने की चीज़ें लगा बार-बार चुराने.

छोटी वृद्ध महिला चिल्लाई, “रूको, मत मचाओ इतना ऊधम!
तीन के लिए घर था नन्हा सा अब चार के लिए है चुन्ना सा.
अलमारी में बैठा शूकर भी इस बात से है सहमत
मेरा घर तो है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

और उसने कहा, “वृद्ध ज्ञानी जी, क्या नहीं करेंगे आप मेरी सहायता?
मेरा तो घर है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

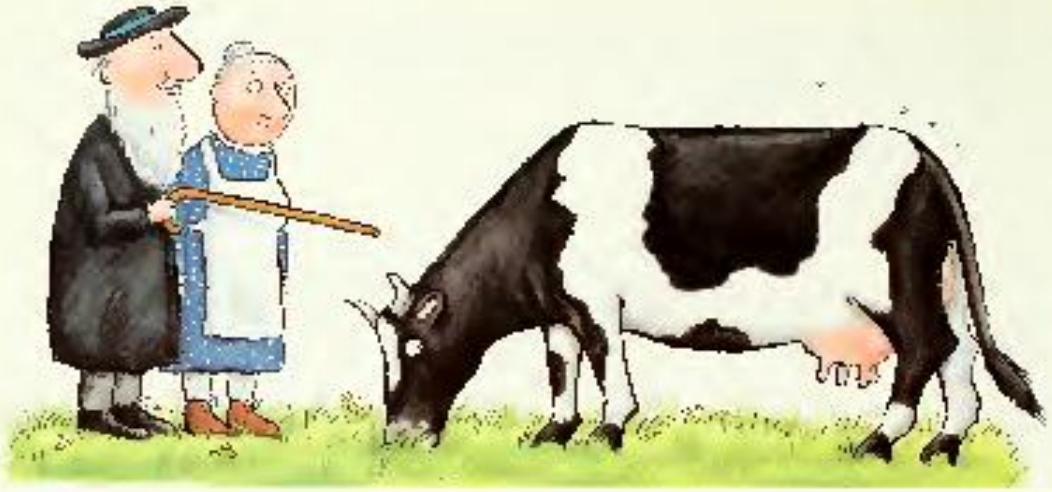

"अपनी गाय को घर में ले आओ," वृद्ध ज्ञानी ने कहा

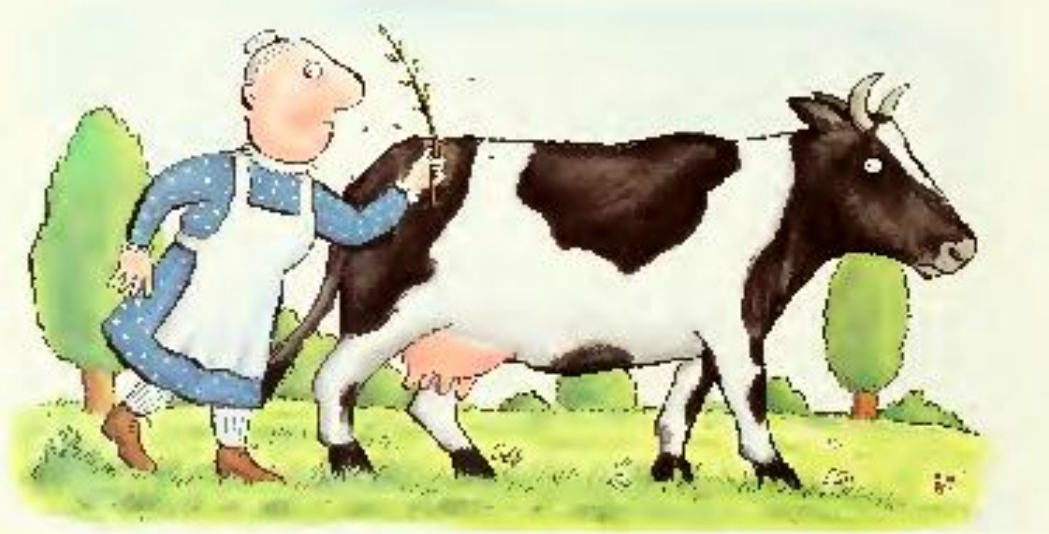

"गाय को अंदर ले आऊँ? कैसी विचित्र है यह सलाह."

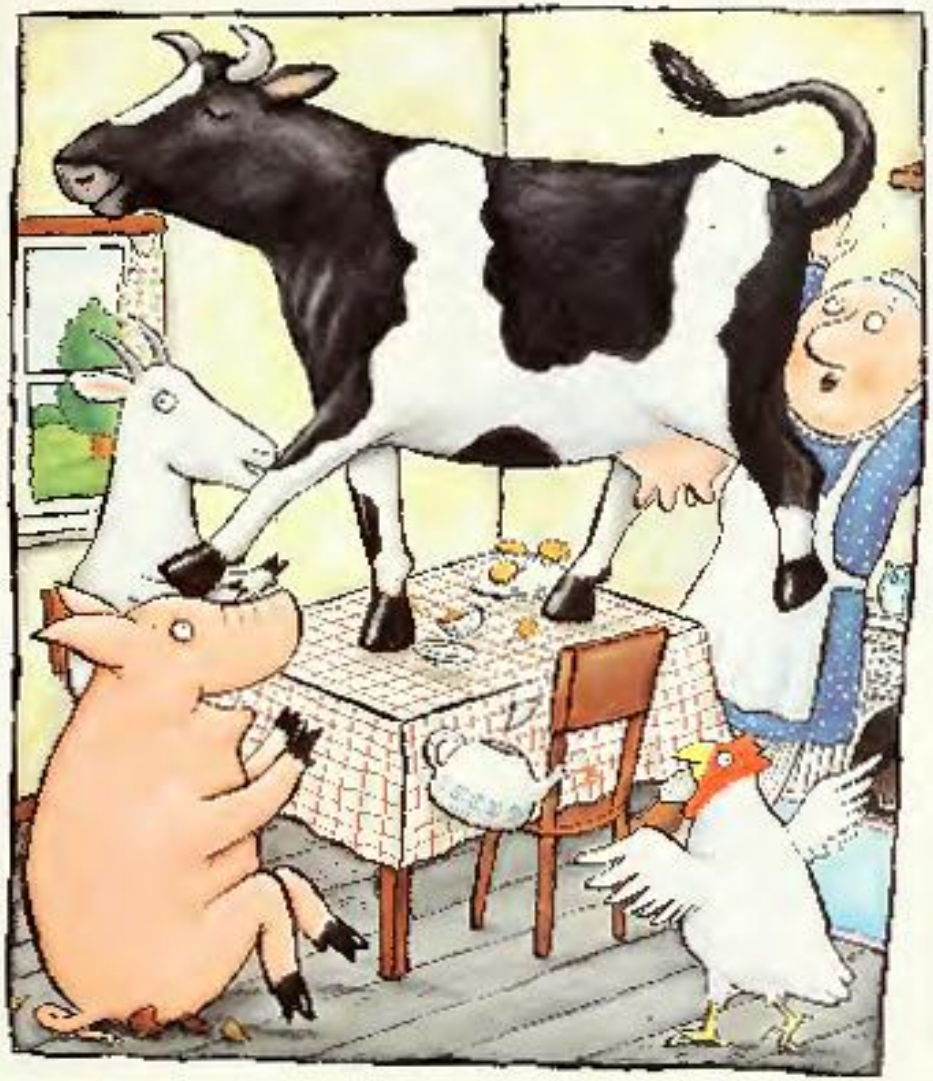

अरे, गाय ने हर एक को देखा और कूद पड़ी शूकर पर,
फिर लगी नाचने जब उछल कर चढ़ गई वह मेज़ पर.

नाटी वृद्ध महिला चिल्लाई, “हे ईश्वर!
चार के लिए था घर चुन्ना सा और पाँच के लिए है बिलकुल तंग.
मैं नोच रही हूँ अपने बाल और झुक गई हूँ घुटनों पर.
मेरा घर तो है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

और उसने कहा, “वृद्ध ज्ञानी जी, क्या नहीं करेंगे आप मेरी सहायता?
मेरा तो घर है बिलकुल तंग और बहुत ही सिकुड़ा हुआ.”

“सब को बाहर निकाल दो,” वृद्ध ज्ञानी ने कहा.
“लेकिन तब तो सब हो जायेगा पहले ही जैसा.”

लेकिन खोल दी खिड़की उसने और मुर्गी उड़ कर गई बाहर.
“यह ठीक है-मैं कम से कम छींक तो मार पाऊँगी यहाँ पर.”

बकरी को दिखाया रास्ता बाहर का और शूकर को भी बाहर धकेला.
“मेरा घर लगने लगा है अब कुछ बड़ा-बड़ा सा.”

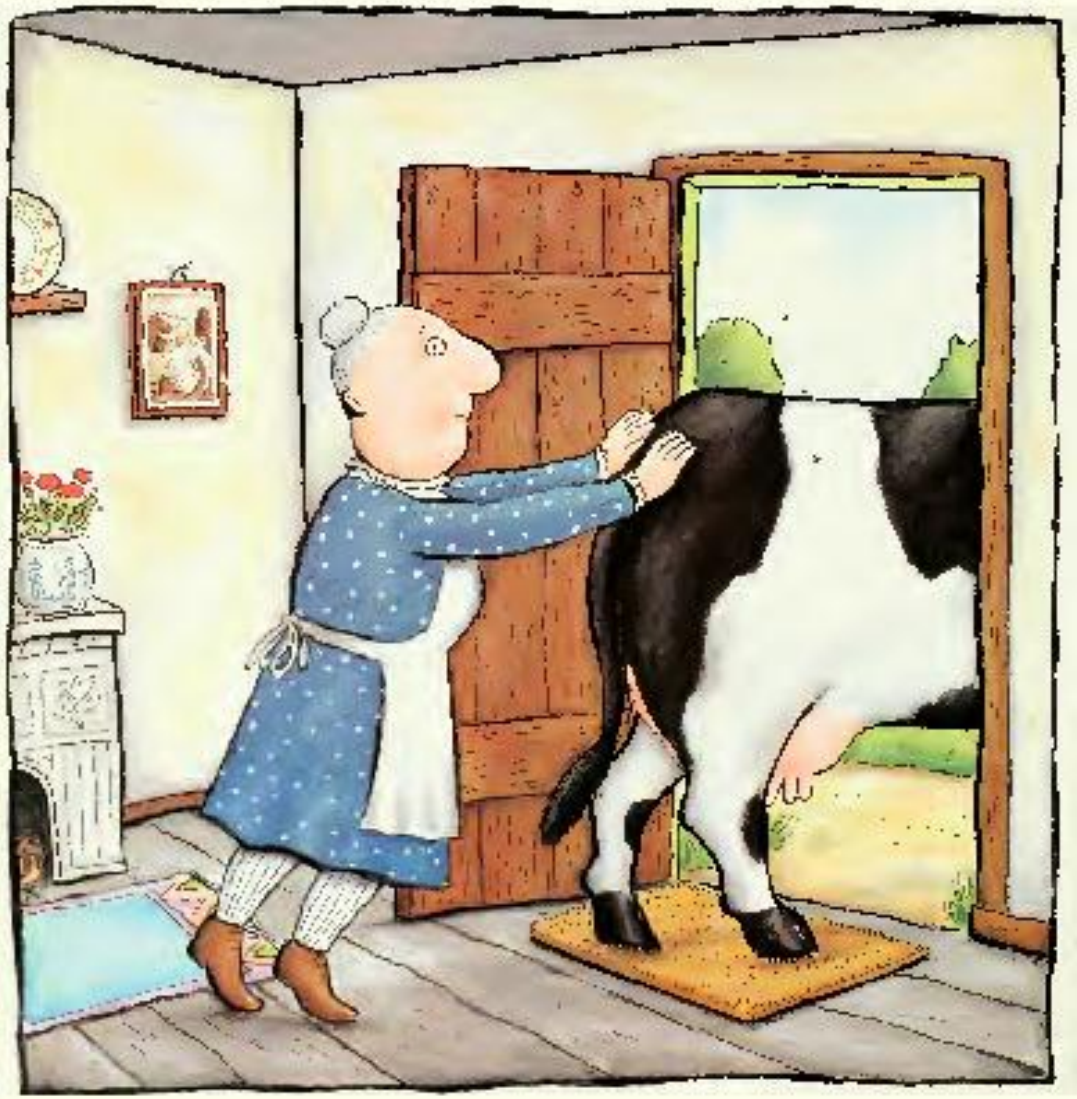

फिर बाहर किया गाय को किया देकर खूब ज़ोर से धक्का.
“ज़रा मेरे घर को तो देखो-अब यह लगता है बहुत बड़ा.”

धन्यवाद महाशय, जो आपने अच्छा परामर्श दिया.
पाँच के लिए था घर बिलकुल तंग
एक अकेले के लिए है यह बहुत बड़ा.
अब है न कोई दिक्कत, अब है न कोई शिकायत,
मेरे घर में तो है अब जगह पर्याप्त.

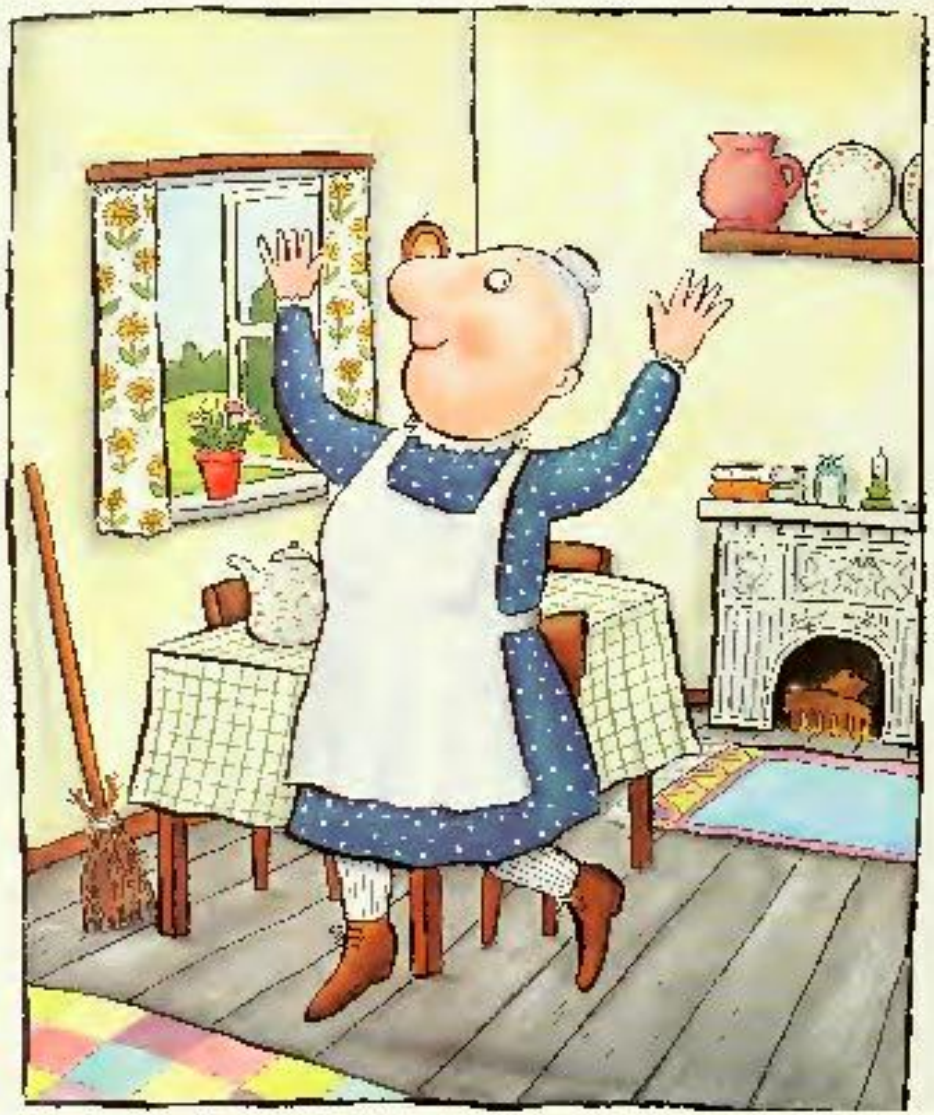

और अब है वह बहुत प्रसन्न और नाचने को करता मन उसका
अब घर न है बिलकुल तंग न बहुत ही सिकुड़ा हुआ.

हाँ, वह है बहुत प्रसन्न और नाचने को करता मन उसका
अब घर न है बिलकुल तंग न बहुत ही सिकुड़ा हुआ.